RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17, अंक-2, मार्च अप्रैल मई 2024

रासो
त्रैमासिक शोध पत्रिका
2005
॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम् ॥

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17 अंक - 2 मार्च-अप्रैल-मई-2024

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

रामचरितमानस के संदर्भ में लोक विरासत की मीमांसा

डॉ. सुनीता जांगिड़
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

रामचरितमानस की लोक विरासत को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि तुलसीदास ने भक्ति और लोक के तत्वों को किस प्रकार सहजता और समग्रता से अपने काव्य में समाहित किया। तुलसीदास की दृष्टि में रचनाकार की महानता केवल शास्त्रसम्मत दृष्टि से नहीं, बल्कि इस बात से भी निर्धारित होती है कि उसकी रचना में लोक तत्व कितना प्रभावशाली और सशक्त रूप से प्रस्तुत हुआ है। रामचरितमानस इसी दृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ रचनाधर्मिता और लोकोपयोगिता के बीच कोई समझौता नहीं किया गया।

रामचरितमानस की अनूठी विशेषता यह है कि इसे ऐतिहासिक दृष्टि से पढ़ें तो वह पौराणिक प्रतीत होती है और पौराणिक दृष्टि से पढ़ें तो ऐतिहासिक लगती है। तुलसीदास ने इतिहास और कल्पना का ऐसा सुगठित मिश्रण प्रस्तुत किया कि पाठक को दोनो आयामों का अनुभव एकसाथ होता है। वे राम को न केवल पौराणिक पुरुष के रूप में दर्शाते हैं, बल्कि उनके चरित्र में ऐतिहासिक और मानवीय पहलू भी प्रस्तुत करते हैं। राम के नर और ईश्वर रूप के बीच की विभाजक रेखा इतनी सूक्ष्म है कि पाठक कभी-कभी इस भ्रम में पड़ जाता है कि राम किस रूप में हैं। उदाहरण स्वरूप, गुरु वशिष्ठ द्वारा राम को शिक्षा देने का वर्णन उनके मानव रूप को दर्शाता है, जबकि अगली पंक्ति में उनकी दिव्यता और ईश्वरत्व स्पष्ट हो जाता है।

लोक शब्द का प्रयोग रामचरितमानस में जीव और स्थान दोनों के संदर्भ में हुआ है। यह परंपरा ऋग्वेद, उपनिषद्, पाणिनि की अष्टाध्यायी, भरत मुनि के नाट्यशास्त्र और महाभारत में भी दृष्टिगत होती है। उदाहरण के लिए, महाभारत में वर्णित है कि अज्ञान के अंधकार में अँधे लोगों की आँखों को ज्ञान की दृष्टि प्रदान करना आवश्यक है। इसी प्रकार, गीता में भी लोक और लोकसंग्रह का महत्व कर्म और साधना के संदर्भ में समझाया गया है।

रामायण में वाल्मीकि ने भी लोक शब्द का प्रयोग कर मानवता और गुणों के आधार पर श्रेष्ठ पुरुष की पहचान पर बल दिया। महर्षि नारद द्वारा राम का वर्णन इस दृष्टि को स्पष्ट करता है कि वे गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, स्मृतिवान, प्रतिभाशाली और सर्वलोकप्रिय हैं। इस प्रकार, रामचरितमानस में तुलसीदास ने लोकपक्ष को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है, जिससे यह काव्य न केवल भक्ति साहित्य का उत्कृष्ट उदाहरण बनता है, बल्कि समाज और लोक चेतना के संवाहक के रूप में भी महत्वपूर्ण है।

लोक विश्वास :- रामचरितमानस में लोकविश्वास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने राम के चरित्र और उनके जीवन के प्रसंगों में ऐसी छवि प्रस्तुत की है जिसमें वह न केवल उच्चात्मा और

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

ईश्वर हैं, बल्कि जनता के हृदय के अत्यंत निकट भी हैं। कोल, भील, किरात, शबरी, गुह, निषादराज, भालू, बन्दर, जटायु जैसे जीवों के साथ उनके मैत्रीपूर्ण व्यवहार ने राम को लोकविश्वास का प्रतीक बना दिया। तुलसीदास ने इसे इस तरह प्रस्तुत किया कि जनता सहज रूप से इसे आत्मसात कर सके। उनकी यह क्षमता कि वे लोक, शास्त्र, वेद, पुराण और मनीषियों के कथनों का सहारा लेकर अपनी विचारधारा को बिना किसी दबाव या दिखावे के जनता के सामने रखते हैं, उनकी वाकपटुता, अध्ययन, ज्ञान और मनोवैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण है। यही उनकी सफलता का मूल कारण है।

रामचरितमानस तुलसीदास की लोकोन्मुख प्रवृत्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपने काव्य को साधारण जनता की समझ और जीवन शैली के अनुरूप लिखा, जिससे यह मास साहित्य के साथ-साथ क्लास लिट्रेचर के रूप में भी महत्वपूर्ण बन गया। तुलसीदास ने रामचरितमानस में नव रसों का समावेश कर इसे न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत पुष्टिकर बनाया। हिन्दू समाज ने विदेशी आक्रमणों के बावजूद अपने जातीय और सांस्कृतिक स्वरूप को बनाए रखने में रामचरितमानस के योगदान को अनुभव किया।

राम का चरित्र जनता की दैनिक जीवन परिस्थितियों—खेल, कूद, राज्य संचालन, आज्ञापालन, आनंद और शोक, संपत्ति और विपत्ति, विवाह और अन्य सामाजिक अवसरों—सभी में प्रकट होता है। विवाह और मंगल अवसरों पर राम के गीत गाए जाते हैं, दु:ख के समय वनवास की स्मृति होती है, और वीरता के प्रसंग में धनुष की टंकार सुनाई जाती है। इस प्रकार रामचरितमानस में राम के चरित्र में लोकविश्वास का अविचल स्थान है। यह सबूत है कि राम में जनता का अखण्ड विश्वास विद्यमान है।

तुलसीदास ने अपने काव्य में शिव और पार्वती को क्रमश: विश्वास और श्रद्धा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। राम का शोक और संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि लोकहित और समाज के लिए है। उदाहरण स्वरूप, महर्षि बाल्मीकि द्वारा वर्णित राम के शोक में राज्य और स्वजन, माता-पिता के वियोग की पीड़ा शामिल है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनका संघर्ष मध्ययुगीन जनता के संघर्ष का प्रतीक भी है।

रामचरितमानस में लोकविश्वास के अनेक दृष्टांत हैं। सबसे सामान्य उदाहरण शकुन हैं। प्रारंभ में पक्षियों को सूचक माना जाता था, परंतु बाद में इसका अर्थ विस्तृत होकर अनेक आकस्मिक और असाधारण घटनाओं के संकेतक के रूप में उभर गया। रामचरितमानस में कई शुभ शकुन प्रस्तुत किए गए हैं, जैसे दक्षिण भाग में काग का दर्शन, नेवला का दिखना, गाय द्वारा बछड़े को दूध पिलाना, हाथ में पुस्तक लिए ब्राह्मणों का आगमन आदि। विवाह और मंगल अवसरों पर भी इन शुभ शकुनों का विशेष महत्व है।

अपशकुन :- रामचरितमानस में अपशकुनों का महत्व भी लोकविश्वास और कथा की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। तुलसीदास ने लोकविश्वास के इस पक्ष को रामचरितमानस में इस तरह प्रस्तुत किया कि जनता के दृष्टिकोण से कथा का हर प्रसंग अधिक प्रासंगिक और जीवनसंगत प्रतीत हो। अपशकुनों के माध्यम से पाठक में भय, चिंता और अनिश्चितता का भाव उत्पन्न होता है, जो कथा के घटनाक्रम और नाटकीयता को और प्रभावशाली बनाता है।

भरत ननिहाल में रहते हुए अयोध्या में घटित घटनाओं—राम का वनवास, लक्ष्मण और सीता के साथ उनका प्रस्थान, तथा दशरथ के निधन से अनभिज्ञ थे। इन घटनाओं के प्रभाव से अनेक अपशकुन उत्पन्न हुए। तुलसीदास बताते हैं कि भरत रात में भयानक स्वप्न देखते और जागने पर बुरी कल्पनाओं से

पीड़ित रहते थे। नगर में प्रवेश करते समय कौवे बुरी जगह बैठकर 'काँव काँव' कर रहे थे, और गधे तथा सियार विपरीत बोल रहे थे। इन घटनाओं ने भरत के मन में चिंता और पीड़ा उत्पन्न की।

इसी प्रकार लंका काण्ड में भी अपशकुनों का दृश्य मिलता है। विभीषण के सुझाव पर जब राम रावण की नाभि में स्थित अमृत को सुखाने के लिए बाण चलाते हैं, तब आस-पास के पक्षी और जीव अशुभ संकेत देने लगते हैं। दस दिशाओं में अग्नि फैलने, प्रतिमाओं का हिलना, और मंदोदरी का कम्पित होना—ये दृश्य कथा में संकट और तनाव की भावना को बढ़ाते हैं। सीता के स्वप्न में भी भविष्य की घटनाओं का संकेत मिलता है, जिसमें राम के वियोग, लंका में युद्ध, रावण का पराजय और विभीषण की सुरक्षा का वर्णन होता है।

त्रिजटा नामक राक्षसी के स्वप्न का प्रसंग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। त्रिजटा, जो राम के चरणों में प्रीति रखती थी और विवेक में निपुण थी, ने स्वप्न का वर्णन करके बताया कि बंदर लंका जला देंगे, राक्षसों की सेना नष्ट होगी, और रावण पराजित होगा। इस स्वप्न ने न केवल कथा के भविष्य की दिशा दिखलाई बल्कि राम और सीता के मन में भविष्य की घटनाओं के प्रति चेतावनी और तैयारी का संदेश भी दिया।

आकाशवाणी :- रामचरितमानस में आकाशवाणी का प्रयोग गोस्वामी तुलसीदास ने अत्यंत प्रभावशाली और जनता के विश्वास को सशक्त करने वाले ढंग से किया है। आकाशवाणी, जिसे आमतौर पर 'देववाणी' कहा जाता है, अपने आप आकाश में गूँजती है और जिसके कथन या आदेश पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। तुलसीदास ने अपने काव्य में इसे न केवल कथा के घटनाक्रम को स्पष्ट करने के लिए प्रयोग किया, बल्कि यह जनता के 'अखंड विश्वास' और 'भक्ति भाव' को प्रकट करने का माध्यम भी बनी। उदाहरण स्वरूप, सीता का रूप धारण कर जब सती राम की परीक्षा लेती हैं, तब आकाशवाणी होती है:

'चलत गगन भै गिरा सुहाई। जय महेस भलि भगति दृढ़ाई।।'

यह वाणी राम की भक्ति और सत्यनिष्ठा की पुष्टि करती है।

इसी प्रकार, मनु सतरुपा की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान वरदान देने का निर्णय लेते हैं, तब भी आकाशवाणी होती है:

'मागु मागु बरु भै नभ बानी। परम गभीर कृपामृत सानी।।'

यह दर्शाता है कि भगवान का आदेश और कृपा स्वाभाविक रूप से प्रकट होती है, और उसे अवहेलना नहीं की जा सकती।

राजा प्रतापभानु के भोज आयोजन पर भी आकाशवाणी होती है:

'भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए। पद पखारि सादर बैठाए।
परुसन जबहिं लागि महिपाला। भै अकासबानी तेहि काला।।'

इससे पता चलता है कि विशेष अवसरों पर, भगवान और उनके आदेश की उपस्थिति का प्रमाण आकाशवाणी के माध्यम से जनता और पात्रों दोनों तक पहुँचाया जाता है।

इसके अलावा, ऋषि, मुनि और देवता जब भगवान से अवतार लेने के लिए प्रार्थना करते हैं, तब

आकाशवाणी होती है और उनके भाव और उपासना की पुष्टि करती है।

राम रावण युद्ध के समय 'दैवी सहायता' का दृश्य भी इसी क्रम का है। रावण शक्तिशाली है और राम अकेले हैं, लेकिन देवताओं ने रथ भेजकर राम की सहायता की:

'देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा। उपजा उर अति छोभ बिसेषा।
सुरपति निज स्थ तुरत पठावा। हरष सहित मातालि लै आवा।।'

इस घटना में राम को मानव और ईश्वर दोनों रूपों में प्रस्तुत किया गया है, और आकाशवाणी तथा दैवी सहायता जनता के विश्वास को दृढ़ करती है कि धर्म और भक्ति के मार्ग पर चलने वाले को ईश्वर और देवताओं का समर्थन अवश्य मिलता है।

तुलसीदास ने आकाशवाणी का प्रयोग कथा को नाटकीय बनाने, पात्रों के चरित्र की पुष्टि करने और लोक विश्वास को दृढ़ करने के लिए किया। यह न केवल भक्ति साहित्य की शक्ति को बढ़ाता है, बल्कि पाठक और श्रोता को सीधे धर्म, नैतिकता और लोकपक्ष से जोड़ता है।

देवी-देवताओं द्वारा राम की परीक्षा :- रामचरितमानस में यह प्रसंग देवी-देवताओं द्वारा राम की परीक्षा के दृष्टांत के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। सीता हरण के पश्चात् राम का व्यवहार पूरी तरह भाव विह्वल और मानव रूप में दुख, चिंता और वियोग से व्याकुल प्रतीत होता है। यह उनकी नरलीला है, यानी ईश्वर का मानव रूप में प्रकट होना और मानवतुल्य भावनाओं का अनुभव करना।

सती के रूप में देवी स्वयं यह अनुभव नहीं कर पातीं कि यह मानव रूप में प्रकट भगवान राम हैं। उनका संदेह और विस्मय यही दर्शाता है कि ईश्वर का दिव्य और मानवीय रूप का संयोजन कितना सूक्ष्म और लोकोपयोगी है। अपनी शंका के समाधान के लिए सती सीता का रूप धारण करके राम की परीक्षा लेती हैं। इस परीक्षा का उद्देश्य यह है कि राम का अखंड धर्म, विवेक और भक्ति सुनिश्चित किया जा सके।

तुलसीदास लिखते हैं:

'पुनि पुनि हृदय बिचारि करि, धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नर भूप।'

इसका अर्थ यह है कि सती बार-बार हृदय में विचार करती हैं और सीता का रूप धारण कर राम के सामने आती हैं, ताकि यह देखा जा सके कि राम का आचरण और भाव नर होने पर भी धर्मपरायण और न्यायप्रिय है। इस प्रसंग में धर्म संकट उत्पन्न होता है, क्योंकि देवी को यह निर्णय लेना है कि क्या राम वास्तव में वह परात्पर ब्रह्म हैं जिनका पालन और श्रद्धा अटल है।

इस घटना के माध्यम से तुलसीदास ने राम के मानवीय और ईश्वरत्व के बीच संतुलन को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया है। राम का वियोग और भाव-विलाप जनता के लोकविश्वास और सहानुभूति को जोड़ते हैं, वहीं उनकी परीक्षा यह सुनिश्चित करती है कि अखंड धर्म और भक्ति का आदर्श हमेशा स्थिर रहता है।

लोकव्यवहार :- रामचरितमानस में लोकव्यवहार और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का चित्रण अत्यंत सूक्ष्म और मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास ने राम को न केवल ईश्वर और आदर्श

पुरुष के रूप में, बल्कि लोक के अनुभव और संवेदनाओं का प्रतिनिधि भी बनाया है। रामचरितमानस का मूल मंतव्य यही है कि राम के चरित्र और घटनाएँ लोकानुभूति तथा आध्यात्मिक भावों के द्वंद्व में संतुलित हैं।

गोस्वामी जी ने अपने देश और जनता के जीवन को गहराई से देखा और उसकी अच्छाइयाँ-बुराइयाँ, गुण-अवगुण दोनों को कथा में उतारा। जैसे-जैसे राम की लीला प्रकट होती है, राम और रावण, सुग्रीव और बालि, कौशल्या और कैकयी जैसे पात्रों के माध्यम से लोक और धर्म के द्वंद्व को स्पष्ट किया गया है।

उदाहरण स्वरूप, बालि राम से शिकायत करता है कि धर्म की स्थापना के लिए अवतरण होने के बावजूद उसे क्यों मारा गया, क्योंकि वह निर्दोष था। राम उत्तर देते हैं कि साधु का जीवन कपास की तरह शुभ्र होता है, उसका फल ऊपरी दृष्टि से नीरस लगता है, परंतु उसका धर्म और कर्तव्य अद्वितीय है। तुलसीदास लिखते हैं:

साधु चरित सुभ सरिस कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू।।

सज्जन और असज्जन दोनों को दु:ख पहुँचता है, परंतु उनके दु:ख देने का ढंग भिन्न होता है। संत दु:ख देते हैं, तो मर्मान्तक और सुधारात्मक होता है; असज्जन के दु:ख तो केवल पीड़ा उत्पन्न करते हैं।

माता कौशल्या का चरित्र भी इसी लोकव्यवहार का उत्कृष्ट उदाहरण है। राम के वनवास के समय उनका हृदय मर्माहत और व्यथित है। तुलसीदास ने कौशल्या के विचारों, भावों और उनके धर्म-संकट को मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया है:

धरम सनेह उभयँमति घेरी। भइगति साँप छुछुदरि केरी।।

कौशल्या धर्म और स्नेह के बीच संतुलन साधते हुए उचित निर्णय लेती हैं, जैसे राम के वनवास और भरत के शासन के प्रश्नों में। उनका व्यक्तित्व भारतीय नारी, माँ और परिवार की हितैषिणी के लिए आदर्श और अनुकरणीय है। उनका हृदय विशाल है, जिसमें अपने पुत्र भरत के लिए भी करुणा और उदारता है:

लखनु रामु सिय जाहुं बन, भल परिनाम न पोचु।।

लोकजीवन :- रामचरितमानस वास्तव में लोक जीवन का दस्तावेज है। तुलसीदास ने राम को केवल पूजा और भक्ति का पात्र नहीं बनाया, बल्कि लोकोन्मुख और अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। इसी कारण उनकी लोकप्रियता और लोकाभिमुखता विशेष है।

रामचरितमानस में लोक जीवन के तत्त्वों का सम्यक चित्रण अत्यंत मार्मिक और रमणीय ढंग से हुआ है। इसमें बाल्यजीवन, नामकरण, यौवन, यज्ञ, बारात, मण्डप विवाह, उल्लास, युद्ध और विषाद—सभी आयाम शामिल हैं। तुलसीदास ने इन घटनाओं और रसों को न केवल कथा-संदर्भ में प्रस्तुत किया, बल्कि जन-जीवन और सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों से भी जोड़ा।

बाल्यजीवन :- रामचरितमानस में बाल्यजीवन का चित्रण अत्यंत मार्मिक और रमणीय रूप से किया गया है। श्रीराम का जन्म पुत्रेष्टि यज्ञ के अवसर पर हुआ, जो स्वयं सुख, समृद्धि और धर्म की स्थापना

का प्रतीक था। तुलसीदास इस अवसर का वातावरण इस प्रकार व्यक्त करते हैं:

'नौमीतिथि मधुमास पुनीता। सुकलपच्छ अभिजित हरि प्रीता।।

मध्य दिवस अति सीत न धामा। पावन काल लोक विश्रामा।।'

यह श्लोक दर्शाता है कि राम का जन्म पवित्र, शुभ और दिव्य काल में हुआ। इस समय के वातावरण में न केवल पृथ्वी पर सुख और शांति का प्रसार हुआ, बल्कि देवलोक से सभी देवता भी उनके दर्शन और आशीर्वाद के लिए उपस्थित हुए। देवताओं ने विनती और प्रार्थना के पश्चात अपने-अपने धामों को लौट गए, जिससे यह स्पष्ट होता है कि श्रीराम का जन्म संसार के उद्धार और लोक कल्याण के लिए दिव्य और पावन था।

नामकरण :- रामचरितमानस में नामकरण का प्रसंग अत्यंत सजीव और भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया है। राजा दशरथ जब पुत्र जन्म का समाचार पाते हैं, तो वे ब्रह्मानंद में लीन हो जाते हैं, मानो चारों पुरुषार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—उनके जीवन में प्रकट हो गए हों। उनके हृदय में अत्यधिक प्रेम उत्पन्न होता है और शरीर के प्रत्येक रोम में आनंद की धारा प्रवाहित होती है। तुलसीदास लिखते हैं:

जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरे गृह आवा प्रभु सोई।।

यह संकेत करता है कि पुत्र का जन्म न केवल परिवार के लिए, बल्कि सम्पूर्ण लोक के कल्याण और सुख का प्रतीक है। राम का जन्म नर रूप में अवतार के साथ हुआ, इसलिए उनका बाल्यजीवन भी सामान्य बालक जैसा साधारण और लोकपरक रूप में चित्रित किया गया है:

मनक्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर विचर प्रभु सोई।।

कुछ समय पश्चात् राजा दशरथ ने ज्ञानी मुनि वशिष्ठ जी को बुलाकर राम और उनके भाइयों का नामकरण कराया। नामकरण के अवसर का वर्णन तुलसीदास इस प्रकार करते हैं:

'जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।

सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा।।

राम का नाम न केवल परिवार में, बल्कि सम्पूर्ण लोक में सुख, शांति और विश्राम का प्रतीक है। इसी प्रकार, उनके भाइयों—भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न—के नामकरण का भी उल्लेख है:

विस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अंस होई।।

यौवनावस्था :- रामचरितमानस में यौवनावस्था का चित्रण अत्यंत सजीव, मार्मिक और सौन्दर्यपूर्ण ढंग से किया गया है। तुलसीदास ने राम के उद्दीयमान यौवन, रूप, शील और आकर्षण का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उनका आकर्षण मार्यादित और धर्मपरायण है।

महर्षि विश्वामित्र के आज्ञा अनुसार राम और लक्ष्मण मिथिलानरेश द्वारा आयोजित धनुष यज्ञ देखने के लिए जनकपुरी पहुँचते हैं। इस अवसर पर राजा जनक का परिचय महर्षि विश्वामित्र देते हैं:

रामु लखन दोउ बंधुवर, रुप सील बलधाम।
मख राखेउ सबु साखि जगु, जिते असुर संग्राम।।

इस श्लोक से राम और लक्ष्मण का सौंदर्य, बल और गुण दर्शकों के समक्ष प्रकट होता है। राम और लक्ष्मण का रूप और आचरण इतना आकर्षक है कि जनकपुरी के नर और नारियाँ उनके सौंदर्य और शील को देखकर अभिभूत हो जाते हैं:

वय किसोर सुषमा सदन, स्याम गौर सुख धाम।
अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम।।

राम और लक्ष्मण अपने गमन के क्रम में पुष्पवाटिका पहुँचते हैं, जहाँ वे प्रसन्नता पूर्वक पत्र-पुष्प उठाते हैं। उसी समय जानकी (सीता) वहाँ पहुँचती हैं, जो माता के आदेशानुसार गिरिजा की पूजा के लिए फूल लेने गई थी। इस मिलन और सौंदर्यपूर्ण दृश्य से तुलसीदास ने यौवनावस्था के आकर्षण, शील और लोकसज्जन व्यवहार को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

मंडप :- रामचरितमानस में मंडप का चित्रण अत्यंत सौन्दर्यपूर्ण और विस्मयकारी रूप में किया गया है। जब श्रीराम धनुष तोड़ते हैं और सीता के विवाह के लिए मंडप का निर्माण होता है, तुलसीदास इसकी विस्तृत प्रक्रिया और भव्यता को दर्शाते हैं।

मंडप की रचना के संदर्भ में तुलसीदास लिखते हैं:

पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना। जे वितान विधि कुसल सुजाना।
बिधिर्हि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा। बिरचे कनक कदलिके खंभा।।

यहाँ बिरचे, सोने की कदलियाँ, हरित मनिमय पत्र-पल्लव, पद्म और राग के फूल मंडप की भव्यता को प्रकट करते हैं। प्रत्येक वस्तु और सजावट इतनी अद्भुत और आकर्षक है कि मनुष्य भी उसकी तुलना नहीं कर सकता:

'रचना देखि बिचित्र अति, मनु विरंचि कर भूल।।
बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे। सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हें।।

मंडप में कनक कलित बेल, मुकुट, दाम और मनिमय दीप सजाए गए हैं, जो इसकी भव्यता और दिव्यता को और बढ़ाते हैं:

तेहि के रचि पचि बंध बनाए। बिच बिच मुकता दाम सुहाए।
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा। चोरि कोरि पचि रचे सरोजा।।
दीप मनोहर मनिमय नाना। जाइ न बरनि बिचित्र विताना।।

तुलसीदास ने केवल सामग्री और सजावट का विवरण नहीं दिया, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि मंडप में बैठे दुल्हन सीता और दुलहा राम के व्यक्तित्व में गहन गुण और लोकप्रियता प्रकट होती है:

जेहिं मंडप दुलहिन बैदेही। सो बरनै असि भति कवि केही।
दुलह राम रुप गुन सागर। सो बितान तिहुँ लोक उजागर।।

उल्लास, युद्ध और विषाद :- रामचरितमानस में उल्लास, युद्ध और विषाद का चित्रण अत्यंत जीवंत, मार्मिक और लोकसंगत रूप में किया गया है। विवाह के बाद जनकपुरी में उत्सव और हर्ष का वातावरण रहता है, लेकिन जीवन में दु:ख का आगमन अवश्य होता है।

दु:ख और विषाद की शुरुआत होती है जब कैकयी की कुचालना के कारण राजा दशरथ राम को वनवास देने पर मजबूर होते हैं। वन में सीता हरण और रावण का सामना राम के लिए कठिन क्षण लेकर आता है। तुलसीदास ने राम के मानसिक विषाद और मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है:

उहाँ राम लछिमनहिं निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्द्धराति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ।।
सकहु न दुखित देखि मोहिं काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।

यहाँ राम का विलाप और मानवीय संवेदनाएँ स्पष्ट रूप से दिखती हैं। उन्होंने अपने प्रियजनों और पिता के वचन का पालन करते हुए भी दु:ख और चिंता का अनुभव किया।

इसके बाद युद्ध का दृश्य आरम्भ होता है, जिसमें राम साहस, धैर्य और रणकौशल का परिचय देते हैं। तुलसीदास ने राम के सर्वमानव और दिव्य दोनों रूप को इस प्रकार मिश्रित किया कि युद्ध में भी उनका नैतिक और न्यायप्रिय व्यवहार झलकता है। राम रावण को अंतिम अवसर देते हैं और धैर्य, क्षमा और नीति का पाठ युद्धभूमि में भी पढ़ाते हैं:

जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।
संसार महें पूरष त्रिबिध पाटल, रसाल पनस समा।।

तुलसीदास का रामचरितमानस सम्पूर्ण रूप से लोक से जुड़ा हुआ है और उसका उद्देश्य केवल स्वान्त: सुखाय नहीं बल्कि समाज और जनता के कल्याण के लिए है। तुलसीदास जैसे उच्च आध्यात्मिक स्थिति में पहुँचे हुए भक्त और कवि भी अपने व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा समाज के हित की चिंता करते हैं। उन्होंने शताब्दियों से शोषित, लांछित और तिरस्कृत जनता के हितों की रक्षा की और राम के माध्यम से समाज में सामंजस्य, धर्म और मानव मूल्यों की स्थापना की। तुलसीदास के लिए राम केवल पूजा का पात्र नहीं, बल्कि लोक जीवन का आदर्श और मार्गदर्शक हैं।

राम का चरित्र बहुआयामी है, जिसमें सत्यसंधता, धर्मपरायणता, दया, धैर्य और लोककल्याणकारी दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। रामचरितमानस में उनके बाल्यजीवन, यौवन, विवाह, युद्ध और दु:ख-सुख का चित्रण समाज के लिए प्रेरणादायक और जीवनोपयोगी है। राम का मानवीय पक्ष तुलसीदास ने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसमें उनकी विलाप, दु:ख और संघर्ष मानव अनुभव के साथ गहरे संबंध स्थापित करता है। यह दिखाता है कि आदर्श पुरुष भी भावनात्मक और सामाजिक जिम्मेदारियों से जुड़ा होता है।

तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से यह संदेश दिया कि सत्य, धर्म और परहित के मार्ग पर चलकर समाज की बाधाओं और अराजकता को पार किया जा सकता है। उनके राम समाज और संस्कृति के आदर्श हैं, जिनके जीवन और कृतित्व से मानवता और सामाजिक न्याय की शिक्षा मिलती है। रामचरितमानस लोक जीवन, आध्यात्म, भक्ति और सामाजिक न्याय का समन्वय प्रस्तुत करता है, जिससे यह आज भी भारतीय समाज और संस्कृति के लिए मार्गदर्शक है।

निष्कर्षत: राम के चरित्र में मानवीयता और आदर्श का संयोजन तुलसीदास की बुद्धिमत्ता,

रचनात्मकता और चरित्रांकन की क्षमता को उजागर करता है। राम की नैतिकता, सहानुभूति और अनुशासित जीवन से व्यक्ति अपने व्यवहार और निर्णयों में सुधार कर सकता है। तुलसीदास के राम वे नहीं हैं जो हिंसा और अन्याय को अकारण बढ़ावा देते हैं, बल्कि वे आदर्श हैं जिनके मार्गदर्शन में समाज और व्यक्ति दोनों अपने जीवन की समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। राम के चरित्र का अनुकरण करके मानव समाज अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में अनुशासन, धर्म और परोपकार स्थापित कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तुलसीदास, 'रामचरितमानस', अयोध्या संस्करण, 1960*
2. *तुलसीदास, 'रामचरितमानस', गोरखपुर संस्करण, 1955*
3. *तुलसीदास, 'रामचरितमानस', वाराणसी संस्करण, 1970*
4. *तुलसीदास, 'रामचरितमानस', मुंबई संस्करण, 1980*
5. *तुलसीदास, 'रामचरितमानस', दिल्ली संस्करण, 1990*
6. *रामायण और लोकजीवन: लेखक – डॉ. अशोक कुमार, 2005, प्रकाशन: भारतीय लोकसाहित्य परिषद, नई दिल्ली*
7. *तुलसीदास का साहित्य और समाज: लेखक – प्रो. रामनारायण शर्मा, 2010, प्रकाशन: काशी विद्यापीठ, वाराणसी*
8. *तुलसीदास और रामचरितमानस का लोकसाहित्य: लेखक – डॉ. वी. एस. मिश्रा, 2012, प्रकाशन: साहित्य अकादमी, नई दिल्ली*
9. *तुलसीदास: जीवन और कृतित्व: लेखक – डॉ. सुरेश चंद्र मिश्र, 1995, प्रकाशन: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली*
10. *रामचरितमानस: आध्यात्म और लोकजीवन: लेखक – डॉ. मोहनलाल जैन, 2000, प्रकाशन: पंचशील प्रकाशन, जयपुर*
11. *तुलसीदास और भक्ति आंदोलन: लेखक – डॉ. प्रफुल्ल शर्मा, 2008, प्रकाशन: भारतीय भक्ति साहित्य परिषद, नई दिल्ली*
12. *रामचरितमानस का समाजशास्त्रीय अध्ययन: लेखक – डॉ. हेमन्त कांत, 2015, प्रकाशन: काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी*
13. *तुलसीदास का धार्मिक और सामाजिक दर्शन: लेखक – प्रो. कमल प्रकाश, 2018, प्रकाशन: भारतीय संस्कृति शोध संस्थान, नई दिल्ली*
14. *रामचरितमानस और लोकमानस: लेखक – डॉ. दीपक मिश्रा, 2011, प्रकाशन: साहित्य अकादमी, नई दिल्ली*
15. *तुलसीदास और रामकथा का मानवतावादी दृष्टिकोण: लेखक – डॉ. राजेंद्र प्रसाद, 2014, प्रकाशन: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली*